Subject :- Sociology Date :- 23/04/2020
Class :- D-II (H) Paper :- 3rd
Topic :- संस्कृतिकरण के प्रभाव एवं प्रक्रियात्मक कारक

By :- Dr. Shyamanand Choudhary
Guest Teacher, Marwari College, Darbhanga
9507941619

Online Study Material No :- (46)

संस्कृतिकरण के प्रभाव
(Impact of Sanskritization)

संस्कृतिकरण के निम्नलिखित प्रभाव है :-

1. सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि :- संस्कृतिकरण ने भारत में सामाजिक गतिशीलता को प्रोत्साहित किया है, परन्तु संस्कृतिकरण के माध्यम से निम्न जातियों को अपनी स्थिति को उन्नत करने का अवसर मिलता है। उदाहरणार्थ :- आधुनिक भारत का सामाजिक गतिशीलता को देखा जा सकता है।
2. जातिवाद एवं जातिगत संघर्षों में वृद्धि :- परम्परागत भारतीय सामाजिक व्यवस्था में निम्न जातियों को उच्च जाति के समान अधिकार प्राप्त नही था। परन्तु संस्कृतिकरण की प्रक्रिया विकसित होने से उच्च जाति कोजो भी अधिकार प्राप्त थे वे आज निम्न जाति को भी प्राप्त है। उदाहरणार्थ :- वेद पढ़ाने का कार्य परम्परागत भारतीय समाज में केवल ब्राह्मण ही करता था, परन्तु संस्कृतिकरण के विकास से आज कोई भी व्यक्ति वेद पढ़ा सकता है। या कोई भी जाति पूजा-पाठ करवा सकता है। इससे जातिगत संघर्षों में वृद्धि हुयी है।
3. उच्च सांस्कृतिक प्रतिमानों का प्रसार :- संस्कृतिकरण के अन्तर्गत निम्न जातियाँ जान-बुझकर अपने से उच्च जातियों के सांस्कृतिक प्रतिमानों को प्रयास करती है जिससे समाज में सांस्कृतिक प्रतिमानों का प्रसार होता है।

संस्कृतिकरण के कारक
(Factor of Sanskritization)

आधुनिक समय में, संस्कृतिकरण की प्रक्रिया के मुख्य कारक अग्रांकित है :-

Scanned with CamScanner

(i) नवीन शिक्षा प्रणाली :- आधुनिक भारत में संस्कृतिकरण की गति प्रदान करने में नवीन शिक्षा प्रणाली का विशेष योगदान रहा है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली के लागू होने से पूर्व शिक्षा में धार्मिक तत्वों का समावेश अधिक था। साथ ही शिक्षा के नियम एवं व्यवस्था ब्राह्मणों के हाथ में थी। लेकिन आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने संस्कृतिकरण को प्रोत्साहित किया है। प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति समझने लगा है कि सामाजिक स्थिति का निर्धारण जन्म नहीं अब कर्म एवं योग्यता के आधार पर होता है।

(ii) नगरीकरण एवं औद्योगीकरण :- आधुनिक समय में संस्कृतिकरण को प्रोत्साहित करने में नगरीकरण एवं औद्योगीकरण का विशेष महत्व है। नगरीय वातावरण संस्कृति के लिए अनुकूल वातावरण है। औद्योगिकरण के कारण भिन्न-भिन्न जगहों से आकर व्यक्ति नगर में बसता है और वे जिस क्षेत्र-विशेष में रहते हैं, वहाँ संस्कृति ग्रहण करते हैं या स्थानीय लोग उसकी सांस्कृतिक विशेषताओं को सीखता है।

(iii) व्यवसाय के अवसरों की समानता :- संस्कृतिकरण के अन्तर्गत जातिय गतिशीलता होती है। परम्परागत रूप से जाति एक बन्द वर्ग था। और वे पूर्वजों द्वारा किये गये निश्चित व्यवसायों को करता था लेकिन संस्कृतिकरण के प्रक्रिया के फलस्वरूप अब सामाजिक एवं प्रशासनिक आधार पर किसी प्रकार का व्यावसायिक प्रतिबन्ध नहीं रहा। भारतीय ग्रामीण समाज में प्रचलित जजमानी व्यवस्था भी समाप्त हो रही है।

(iv) यातायात एवं संचार के साधनों में वृद्धि :- यातायात एवं संचार के साधनों के परिणाम स्वरूप संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में वृद्धि हुयी है। लोगों में क्षेत्रीय गतिशीलता बढ़ी है। लोग एक देश से दूसरे देश जाने लगे हैं तथा अपने पसन्दीदा व्यवसाय को कर रहे हैं।

(v) वैधानिक कारक :- अस्पृश्यता अपराध अधिनियम 1955 के अनुसार किसी निम्न जाति के सदस्य के साथ अद्भुत सा व्यवहार करना दण्डनीय अपराध है। इसी प्रकार अब कोई भी अन्तरजातिय विवाह का किसी प्रकार प्रतिबन्ध नहीं रहा है यह संस्कृतिकरण के कारण ही संभव हुआ है।

Scanned with CamScanner

(vi) धार्मिक तथा सामाजिक आन्दोलन :- धार्मिक तथा सामाजिक सुधार आन्दोलन ने भी जाति कठोरता कम किया एवं संस्कृतिकरण की प्रक्रिया को बढ़ावा दिया है। आर्य समाज ब्रह्म समाज एवं प्रार्थना समाज जैसे अनेक आन्दोलनों ने भी इसमें सक्रिय भूमिका निभाया है।

संस्कृतिकरण की प्रक्रिया
(Process of Sanskritization)

भारत में संस्कृतिकरण की प्रक्रिया अति प्राचीन से प्रचलित है। यह प्रक्रिया सर्वप्रथम अनार्य जातियों में भी जो आर्यों से हार चुकी थी। अनार्य जातियों ने अपने उन्नत के लिए आर्य जातियों के रीति-रीवाजों को आचार-व्यवहार को अपना प्रारंभ किया। मध्य काल में भारत की जाति व्यवस्था कठोर थी। इसके बाद, अंग्रेजों का काल आया। अंग्रेजी काल में विभिन्न प्रभावों के फलस्वरूप सांस्कृतिक जागरूकता में वृद्धि हुयी।

इसके बाद स्वतंत्रता संग्राम एवं राष्ट्रीय चेतना काल आया। इसमें महात्मा गाँधी का प्रादुर्भाव हुआ। निम्न जातियों के उत्थान के लिए उन्होंने निम्न जातियों के अछुत के स्थान पर 'हरीजन' शब्द का प्रयोग किया था। जहाँ गाँधी जी एक ओर निम्न जातियों को आत्म विश्वास जाग्रत किया। वहीं दूसरी ओर उच्च जाति की संकुचित धारणा एवं विरोध को कम किया।

इसके बाद स्वतंत्रता काल आता है भारतीय संविधान, धर्म, जाति, निरपेक्ष संविधान है। फिर भी निम्न एवं पिछड़ी जाति के उत्थान के लिए आरक्षण की व्यवस्था है।

उपरोक्त सभी कारणों ने भारत में संस्कृतिकरण की प्रक्रिया को बढ़ावा दिया है।

आलोचनाएँ
(Criticism)

Dr. M.N. Shree Nivas द्वारा संस्कृतिकरण की अवधारणा को समाजशास्त्र में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है फिर भी अनेक विद्वानों ने अनेक दृष्टि से इसका आलोचना किया है :-

(1) सीमित क्षेत्रीय अध्ययन पर आधारित :- श्री निवास ने संस्कृ-

Scanned with CamScanner

(4)

तिकरण की अवधारणा को सीमित क्षेत्र एवं कुर्ग विषयक अध्ययन पर किया था। आलोचकों का कहना है कि ऐसे आधार पर किसी समान्य अवधारणाओं का निर्माण नही किया जा सकता है।

(iii) संस्कृतिकरण दिशागामी प्रक्रिया नही है :- श्रीनिवास ने संस्कृतिकरण में निम्न जातियों उच्च जातियों की उन्मुख होती है, जबकि आलोचकों का कहना है कि यह दिशागामी प्रक्रिया नही है। यह उच्च एवं निम्न जातियों के मध्य सांस्कृतिक आदान-प्रदान है।

(iii) संस्कृतिकरण शब्द अनुपयुक्त है :- श्रीनिवास संस्कृतिकरण का प्रयोग जातिय गतिशीलता के लिए किया है। जिसे आलोचकों ने अनुपयुक्त माना है। डॉ० राधवन के अनुसार, संस्कृतिकरण भाषा विज्ञान का शब्द है। इसका प्रयोग समाज विज्ञान के क्षेत्र में नही किया जा सकता।

डॉ० प्रभू के अनुसार संस्कृतिकरण एक अनुपयुक्त शब्द है। भारतीय समाज में ब्राह्मीकरण और राजपूतीकरण के रूप यह प्रक्रिया देखी जाती है।

(iv) अखिल भारतीय अवधारणा नही :- डॉ० श्रीनिवास के अनुसार संस्कृतिकरण सर्वदेशिक अवधारणा है। डॉ० मजुमदार ने इसकी आलोचना करते हुये कहा है कि यदि वह एक प्रक्रिया है तो क्यों रुकती है, कहाँ रुकती है।

(v) सांस्कृतिक परिवर्तन के साथ ही साथ संरचनात्मक परिवर्तन भी है डॉ० श्रीनिवास के शब्दों में। लेकिन आलोचकों का कहना है कि संस्कृतिकरण से सिर्फ जातिय परिवर्तन होता है संरचना नही।

Dr. S. N. Choudhary
Guest Teacher, Marwari College, Darbhanga

Scanned with CamScanner